

दूरियाँ हर तरह की मिटाते हैं हम, 'स्थलों' और 'दिलों' को करीब लाते हैं हम!

प्रिय पाठको,

आप सभी को नये वर्ष की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ! हम जानते हैं कि समय बड़ा बलवान है और समय के इशारों पर ही यह सृष्टि गतिमान है। अगर कोई व्यक्ति समय के साथ नहीं चल सकता तो वह पीछे छूट जाता है और प्रगति की दौड़ में भी पिछड़ जाता है। हमें खुशी है कि इसी ताकतवर वक्त के साथ रोमांचक कदमताल करते हुए हमारी पश्चिम रेलवे 5 नवम्बर, 2010 को अपने गौरवशाली अस्तित्व के 60 वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। हीरक जयंती के इस मंगलमय अवसर पर 'रेल दर्पण' परिवार की ओर से पश्चिम रेल परिवार के सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन ! 5 नवम्बर, 1951 को बी बी एन्ड सी आई और अन्य रियासती रेलों के विलय के फलस्वरूप अपना अस्तित्व पाने वाली पश्चिम रेलवे का गौरवशाली रथ हमेशा प्रगति के पथ पर अग्रसर रहा है और इसीलिए हमने आप सबकी प्रिय पत्रिका 'रेल दर्पण' का नवीनतम अंक अपने वजूद के 60 वें शानदार वर्ष में पदार्पण करने वाली पश्चिम रेलवे के 'हीरक जयंती वर्ष विशेषांक' के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया है।

सम्पादकीय



शुभकामनाएँ प्रकट की हैं, उनके लिए हम तहे दिल से शुक्रगुजार हैं। यह हम सभी के लिए प्रसन्नता की बात है कि हमारी प्रिय पत्रिका 'रेल दर्पण' ने अपनी समग्र सृजनात्मक श्रेष्ठता के लिए लगातार आठवें वर्ष दो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। ये प्रतिष्ठित पुरस्कार व्यावसायिक संचार कर्ताओं के भारतीय संगठन 'एसोसिएशन ऑफ बिजनेस कम्युनिकेटर्स ऑफ इंडिया' (ए. बी. सी. आई.) द्वारा पिछले दिनों मुंबई में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में प्रदान किये गये। इस गौरवपूर्ण उपलब्धि के लिए सम्पादकीय टीम के सभी सदस्यों और रचनाकारों के साथ-साथ हम सभी पाठकों का भी हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

जून, 2010 में प्रकाशित 'रेल दर्पण' के 'प्रौद्योगिकी विशेषांक' को व्यापक तौर पर सराहा गया और हमें इसकी प्रशंसा करने वाली अनेक प्रतिक्रियाएँ मिलीं, जिनसे हमारे हौसले और भी बुलंद हुए हैं। विभिन्न प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में छपी इस अंक की समीक्षाओं और चुनिंदा चिट्ठियों का

भारतीय रेल प्रणाली के बारे में किसी कवि ने क्या खूब लिखा है :-

'भारतीय रेल के हैं इरादे सबल, फासले मिटाने के फैसलों पर अमल, दूरियाँ हर तरह की मिटाते हैं हम, 'स्थलों' और 'दिलों' को करीब लाते हैं हम!'

जी हाँ, सचमुच 'स्थलों' और 'दिलों' को परस्पर करीब लाकर भिन्न-भिन्न संस्कृतियों एवं सम्प्रदायों के मुसाफिरों के बीच भावनात्मक दूरियाँ मिटाने का काम रेलगाड़ी बखूबी करती आई है और पश्चिम रेलवे ने भी इसी सिद्धांत पर अमल करते हुए राष्ट्रीय एकता की मशाल को निरंतर जलाये रखा है। अपनी कलात्मक उत्कृष्टता की बदौलत 'रेल दर्पण' आज समूची भारतीय रेल प्रणाली में एक जाना-पहचाना नाम बन चुका है। पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क विभाग द्वारा पिछले 10 वर्षों से निरंतर प्रकाशित की जा रही इस प्रतिष्ठित गृह पत्रिका के प्रधान सम्पादक के पद का दायित्व पा कर मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। साथ ही प्रधान सम्पादक के रूप में आपसे पहली बार मुखातिब होकर मैं काफी पुलकित और रोमांचित भी हूँ। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी के पद पर अपनी नियुक्ति के बाद सबसे पहले मैंने 'जनसम्पर्क' विषय के विभिन्न पहलुओं को गहराई से जानने की कोशिश की। इसी दौरान मैंने पाया कि आज के बदलते सामाजिक परिवेश में 'जनसम्पर्क' समाज के किसी भी संगठन के लिए एक अनिवार्य जरूरत बन चुका है। पिछले दिनों एक विवादास्पद जनसम्पर्क एजेंसी की मुखिया और उनके जैसे अनेक पात्रों के सामाजिक पटल पर उजागर होने के बाद तो 'जनसम्पर्क' और 'कॉर्पोरेट जगत' के कई छिपे पहलू भी सामने आ रहे हैं। ऐसे में 'जनसम्पर्क' के इतिहास, कला, विज्ञान और भविष्य के बारे में अध्ययन कर मैंने तमाम पाठकों के लिए एक विशेष लेख तैयार किया है, जिसे इस अंक के अंग्रेजी खंड में प्रकाशित किया गया है।

'रेल दर्पण' के 'हीरक जयंती विशेषांक' की खासियत यह है कि इसमें हमने पश्चिम रेलवे के समृद्ध एवं गौरवशाली अतीत को विविध तस्वीरों एवं सामग्री के जरिये आप तक पहुँचाया है। 5 नवम्बर, 1951 को आयोजित पश्चिम रेलवे के उद्घाटन समारोह की दुर्लभ तस्वीरों को आधार बनाकर हमने मध्य पृष्ठों पर प्रकाशित कैलेंडर के रूप में नूतन वर्ष का एक यादगार उपहार दिया है। साथ ही, इस ऐतिहासिक समारोह का जो प्रेस कवरेज तत्कालीन बम्बई के सबसे प्रमुख अखबार 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के 6 नवम्बर, 1951 के संस्करण के मुख पृष्ठ पर तथा वेस्टर्न रेलवे की मैगजीन में छपा था, उसे भी हमने यथावत प्रकाशित कर अपने पाठकों को अतीत के झरोखे में झाँकने का अवसर दिया है। इस अंक में जहाँ हमारे महाप्रबंधक महोदय श्री रवीन्द्र नाथ वर्मा जी ने अपने 'स्वाधीनता दिवस संदेश' में पश्चिम रेलवे पर विभिन्न क्षेत्रों में हुए विकास के व्यापक पहलुओं से अवगत कराया है, वहीं 'हीरक जयंती पर विशेष लेख' अध्याय के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के सभी विभागों एवं मंडलों में पिछले कुछ वर्षों में हुई प्रगति का लेखा-जोखा सम्बंधित प्रधान विभागाध्यक्षों एवं मंडल रेल प्रबंधकों के विशेष लेखों के जरिये हमने पाठकों तक पहुँचाया है। नये प्रशासकों के रूप में हमने अपने नये प्रधान विभागाध्यक्षों एवं भावनगर के नये मंडल रेल प्रबंधक का हार्दिक स्वागत किया है, वहीं स्वयं महाप्रबंधक महोदय ने अपने विशेष संदेश के जरिये 'रेल दर्पण' एवं पश्चिम रेल परिवार के उज्ज्वल भविष्य हेतु जो

प्रकाशन हमने 'पाठक-पीठिका' स्तम्भ के अंतर्गत किया है। हमेशा की तरह इस बार भी कथा-कुंज, व्यंग्य-वोधिका, वैचारिकी, सामयिक गतिविधियाँ, काव्यात्मक अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक हलचल, तस्वीर बोलती है, मंडलों के अंचलों से, स्वास्थ्य चर्चा और सखियों का संसार जैसे नियमित स्तम्भों ने अपनी रोमांचक छटा बिखेरी है, वहीं इस अंक से हमने एक नया स्तम्भ 'जिंदादिली और उल्लास के हरकारे' शुरू किया है, जो आप सबको जरूर लुभायेगा। 'विशिष्ट अतिथि रचनाकार' की महफिल में इस बार सुप्रसिद्ध कवि श्री सूर्यभानु गुप्त जी ने शिरकत की है। मशहूर फिल्म गीतकार श्री गुलज़ार साहब की विशेष काव्य रचना से शुरू हुआ यह स्तम्भ 'रेल दर्पण' का सर्वाधिक लोकप्रिय स्तम्भ है और अब तक सर्वश्री जावेद अख्तर, निदा फाजली, गोपालदास नीरज, स्व. कैफी आज़मी, स्व. शैल चतुर्वेदी, स्व. शैलेन्द्र, श्रीमती माया गोविन्द, आशकरणा अटल और अशोक चक्रधर जैसे दिग्गज कलमकारों की विशेष काव्य रचनाओं ने इस स्तम्भ और पत्रिका को विशिष्ट समृद्धि एवं गरिमा प्रदान की है। अंग्रेजी खंड में इस बार बॉलीवुड के डांसिंग स्टार श्री जीतेन्द्र जी का विशेष इंटरव्यू आपको बहुत पसंद आयेगा। हीरक जयंती के इस खास मौके पर हमने अपने पाठकों को दोहरे तोहफे के तौर पर एक और हस्ती का इंटरव्यू परोसने का फैसला किया और इस क्रम में मशहूर कॉमेडियन श्री राजू श्रीवास्तव से भी पाठकों को रूबरू करवाया है। कुल मिलाकर इस 'हीरक जयंती विशेषांक' के जरिये हमने 'गागर में सागर' भरने की पुरजोर कोशिश की है। आपकी चिट्ठियों, प्रतिक्रियाओं और समीक्षाओं के जरिये ही हमारी कोशिशों की कामयाबी तय होगी। इसलिए हमें रहेगा उनका बेसब्री से इंतज़ार...!

अंत में एक बार फिर आप सभी को नव वर्ष तथा पश्चिम रेलवे के हीरक जयंती वर्ष की हार्दिक बधाई देते हुए मैं इन पंक्तियों के साथ अपनी लेखनी को यहीं विराम देता हूँ :-

हीरे जैसे दिल में जिसके, सबके प्रति बसा सद्भाव,
ऐसी पश्चिम रेल के सफ़र में आया अनमोल पड़ाव,
गौरवशाली अतीत जिसका, गतिशील है वर्तमान,
पश्चिम रेल प्रगति के पथ पर, सदा-सर्वदा है गतिमान,
इस गरिमामय अवसर पर उज्ज्वल भविष्य के दीप जलायें !
आओ, हम सब, पश्चिम रेल के 60 वें साल का जश्न मनायें !

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी,

शरत

(शरत चंद्रायन)

प्रधान सम्पादक, रेल दर्पण एवं
मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी,
पश्चिम रेलवे, चर्चगेट